राष्ट्रीय संस्करण
www.jagran.com
दैनिक जागरण
रविवार 9 मार्च, 2025

100 से अधिक सत्रों का आयोजन किया जाएगा नई दिल्ली में सात से 12 मार्च के बीच आयोजित हो रहे साहित्य अकादेमी महोत्सव में। इस महोत्सव का विषय भारतीय साहित्यिक परंपराएं है।

आजकल

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

लेखकों से समय का छूटता सिरा

देश की राजधानी नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी का साहित्योत्सव चल रहा है। एशिया का सबसे बड़ा साहित्य महोत्सव समझे जाने वाले इस आयोजन में देश के विभिन्न हिस्सों से 50 से अधिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 700 लेखक इसमें शामिल हो रहे हैं। केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने इस कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए साहित्य को संवारने के संबंध में कई बातें कहीं। साथ ही, उन्होंने साहित्यकारों से यह भी अपेक्षा जताई कि देश में हो रहे परिवर्तन को समझते हुए उस अनुरूप साहित्य सृजन किया जाना चाहिए

नई दिल्ली में शुक्रवार को साहित्योत्सव के उद्घाटन सत्र में अपनी बात रखते गजेन्द्र सिंह शेखावत। जागरण

दिल्ली के रवींद्र भवन में साहित्य अकादेमी का साहित्योत्सव चल रहा है। अकादमी का दावा है कि यह साहित्य उत्सव एशिया का सबसे बड़ा उत्सव है। कार्यक्रम की संरचना से इसकी विशालता का अनुमान लगाया जा सकता है। पिछले चार दशकों से साहित्य अकादेमी यह आयोजन करती रही है। जबसे के. श्रीनिवासराव अकादमी के सचिव बने हैं, तबसे यह आयोजन निरंतर समृद्ध हो रहा है। लेखकों की भागीदारी के स्तर पर भी और विषयों के चयन में भी। साहित्योत्सव का शुभारंभ केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने किया। विभिन्न भारतीय भाषा के साहित्यकारों और लेखकों की उपस्थिति में करीब आधे घंटे के भाषण में शेखावत ने कई महत्वपूर्ण बातें कहीं। साहित्य का सृजन करनेवालों की प्रतिष्ठा, राजनीतिज्ञों का हमारे समाज में स्थान, सांस्कृतिक चिंतन की भारतीय परंपरा, भारत के भविष्य और उसकी प्रासंगिकता पर शेखावत ने अपनी बात रखी। साहित्यकारों की भूमिका को सम्मानपूर्वक याद किया। साहित्य की जीवंतता और गतिशीलता, भारत की विविधताओं का साहित्य में स्थान, देश की एकता के सूत्र में बांधने में साहित्य की भूमिका जैसे विषयों को संस्कृति मंत्री ने अपने व्याख्यान में छुआ। साहित्य समाज का दर्पण है, उससे आगे जाकर शेखावत ने कहा कि हमारा साहित्य केवल समाज के वर्तमान का दर्पण नहीं, अपितु भारत के दर्शन, भारत के धर्म, भारत की नीति, भारत का प्रेम, भारत का युद्ध, भारत की स्थापत्य कला और भारत के समाज जीवन से जुड़ी बातों की व्याख्या भी है। यहां पर उन्होंने बौद्धिक पुरुषों की भूमिका पर टिप्पणी तो की, लेकिन समय जैसे उन्हें बहुत महत्व नहीं देना चाहते हैं।

शेखावत ने उपस्थित साहित्यकारों के सामने विमर्श के एक चुनौती भी रखी। साहित्यकारों और लेखकों का आह्वान किया कि वो परिवर्तन के वर्तमान दौर को अपने लेखन का विषय बनाएं। परिवर्तन के वाहक के रूप में स्वयं को इस तरह से अनुकूलित करें कि आनेवाली पीढ़ी उनका स्मरण करे। शेखावत ने कहा कि आज भारत नई करवट ले रहा है। पूरे विश्व में भारत की नई पहचान बन रही है। पिछले 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने जिस तरह और जिस गति के साथ प्रगति की है, केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही नहीं इससे इतर भी, उससे पूरे विश्व में भारत का सम्मान नए सिरे से पढ़ा और लिखा जा रहा है। सम्मान बढ़ने के साथ भारत के ज्ञान को, विज्ञान को, योग को, संस्कृति को, आयुर्वेद को, जीवन पद्धति को नए सिरे से पूरे विश्व में पहचान मिल रही है। ऐसे समय में हमारे साहित्य सर्जकों की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण हो जाती है। जब कोई समाज या राष्ट्र परिवर्तन के दौर से गुजरता है, जब संभावनाएं द्वार पर दस्तक देती हैं, तो हर घटक की जिम्मेदारी बनती है कि वो बदलाव के पहिए को गति प्रदान करने का माध्यम बने। शेखावत ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हम सबको ऐसे समय में जीने और काम करने का अवसर मिला है, जब भारत इस तरह के व्यापक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है कि भारत विकसित होने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। भारत विश्व का बंधु बनकर नेतृत्वकर्ता बनने जा रहा है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में समाज के सबसे महत्वपूर्ण तबके को भी अपनी जिम्मेदारी का आकलन करके अपनी भूमिका का निर्धारण करना चाहिए।

अंत में गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि वह ऐसा नहीं कह रहे, कहने की धृष्टता भी नहीं कर सकते कि आज के साहित्यकार बदलाव को लक्षित कर लिख नहीं रहे। उन्होंने अवसर का लाभ उठाते हुए लेखकों से अनुरोध किया कि समय की करवट की पहचान कर देश को एक स्वर, एक विचार, एक मन, एक संकल्प लेकर एक पथ पर आगे ले चलें, ताकि उस पर गर्व किया जा सके। शेखावत ने स्वाधीनता संग्राम में साहित्यकारों और लेखकों की भूमिका को भी याद किया। कहा कि आज से सौ डेढ़ सौ साल पहले जिन लोगों ने अंग्रेजों की सत्ता के खिलाफ संघर्ष किया था, उनके पास भी वह अवसर था। जिन्होंने गुलामी की व्यथा को शब्द दिया उनके पास भी अवसर था। अवसर के अनुरूप आचरण के कारण उनका नाम अमर हो गया है। आज भी उनके नाम को सुनकर अपने रक्त में स्पंदन महसूस करते हैं। मैं आज यह बात जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि भारत परिवर्तित होगा। 50 साल बाद जब इस परिवर्तन का इतिहास लिखा जाएगा तो मैं चाहूंगा कि आपका नाम भी उसमें हो सम्मान के साथ आनेवाली पीढ़ी स्मरण करते हुए गर्व करे जिस गर्व की अनुभूति सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के स्मरण से होती है।

साहित्योत्सव के उद्घाटन भाषण में संस्कृति मंत्री ने भले ही अंत में कुछ विनम्र हुए शिकायत की हो, लेकिन इसकी गूंज लंबे समय तक साहित्य जगत में रहनेवाली है। आज साहित्यकारों और लेखकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने समय को न पकड़ पाने की है। पटना में आयोजित जागरण बिहार संवादी के दौरान उपन्यासकार रत्नेश्वर ने एक सत्र में इस बात को रेखांकित किया था कि आज के लेखक अपने समय में घटित हो रहे बदलाव को या तो पकड़ नहीं पा रहे हैं या जानबूझकर उसकी अनदेखी कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा था कि यह अकारण नहीं है कि आज बड़े पद के न तो कहानीकार सामने आ रहे हैं और न ही उपन्यासकार। पिटी पिटाई लीक पर चलने से पाठक विमुख होते जा रहे हैं। समय का हाथ छूट जाने का दुष्परिणाम है कि आज उपन्यासों की बिक्री पांच सौ प्रतियों तक हो रही है। कविता संग्रह के प्रकाशन के लिए कम ही प्रकाशक उत्सुक दिखते हैं। हाल ही में प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ को केंद्र में रखकर अनिल विश्वकर्मा ने 'जलकुंभियां' नाम से एक कविता लिखी। इस कविता में अनिल विश्वकर्मा ने लिखा, जलकुंभियों का महाकुंभ पधारे नहीं कोई नहीं करता जलकुंभियों की चिंता कोई कर भी नहीं सकता चिंता करे भी तो कोई क्यों, हमेशा नदी जल में पनपती हैं वे निर्मल जल को सड़ा जाता है इनके संगम में पानी पत्ता और मखाना की तुलना होती हैं जलकुंभियां इन्हें स्नान करना ही पड़ेगा जहां-जहां भी हैं जल, जीव जलाशी मखाना, जलाशी पाये पान।

इस कविता में अनिल विश्वकर्मा ने महाकुंभ की अकारण आलोचना करनेवालों पर प्रहार किया है। वे कहते हैं कि इन्हें स्नान करना ही पड़ेगा। निहितार्थ स्पष्ट है। इस कविता के सामने आने के बाद अनिल विश्वकर्मा की आलोचना आरंभ हो गई। जबकि देखा जाए तो विश्वकर्मा समाज मानस में हो रहे परिवर्तन को पकड़ने और उसको लिखने का प्रयास कर रहे हैं। आज भारतीय समाज में जिस तरह के परिवर्तन हो रहे हैं, क्या वे साहित्य का विषय बन पा रहे हैं? इस पर चर्चा होनी चाहिए। संस्कृति मंत्री ने साहित्य अकादेमी के मंच से लेखकों से इस परिवर्तन को पकड़ने और परिवर्तन का सारथी बनने का आह्वान किया। अगर ऐसा हो पाता है तो न केवल भारतीय साहित्य का भला होगा, बल्कि लेखकों को समाज जीवन से जुड़ने और समाज के मन को समझने का अवसर भी मिल सकेगा।